पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

SEMESTER – 3

CC – 14

Unit – 3

Russian Revolution: class and State

रूसी क्रांति: वर्ग और राज्य

(Volume-2)

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क : 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क : 9430934480

रूसी क्रांति: वर्ग और राज्य

रूस की राज्यक्रांति (1917) इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, जिसने सदियों से चली आ रही जार की सत्ता को समाप्त किया और सर्वहारा वर्ग की सत्ता को स्थापित किया। जहां अमेरिकी क्रांति उपनिवेशवाद को चुनौती दी थी, वहीं फ्रांस की राज्यक्रांति ने लोकतंत्र, राष्ट्रीयता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को स्थापित किया था। इसी प्रकार 1917 में रूस में जो राज्य क्रांति हुई उसने जार के स्वेच्छाचारी शासन का अंत ही नहीं किया बल्कि रूस में लोकतंत्र की स्थापना भी किया। इसके अलावा सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में भी रूसी क्रांति ने राज्य की सुविधा प्राप्त वर्ग को चुनौती दिया। यहां सुविधा प्राप्त वर्ग किसान मजदूर जैसे सर्वहारा वर्ग के लोगों पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तरीकों से अपना अधिकार स्थापित किए हुए थे और उनका शोषण कर रहे थे। रूसी क्रांति इसी शोषण का परिणाम था। क्रांति का नेतृत्व समाजवादी विचारधारा से प्रभावित लोगों ने किया।इसी कारण जब क्रांति सफल हुई तब रूस में समाजवाद की विचारधारा को पहली बार मूर्त रूप मिला।

विरोध करते हुए क्रांतिकारी (फरवरी १९१७)

सर्वप्रथम रूस में मौजूद विभिन्न वर्गों के बारे में जानते हैं। यहां मौजूद विभिन्न सामाजिक वर्गों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यहां का सामाजिक स्थिति वैसी ही थी जैसे 1789 से पूर्व फ्रांस की थी। समस्त रुसी समाज दो वर्गों में विभक्त था- प्रथम अधिकार प्राप्त वर्ग, जिसमें जार के कृपा पात्र कुलीन लोग थे। ये लोग जार की निरंकुशता और स्वेच्छाचरिता को आवश्यक समझते थे। यह वर्ग बहुत संपन्न भी था राज्य के अधिकांश महत्वपूर्ण पदों पर तथा अधिकांश भूमि पर इन्होंने अधिकार कर रखा था।

कुलीन वर्ग जार के निरंकुश छत्रछाया में रहकर अपने जागीरो में मनमानी करते थे। अतः ये लोग जार के परम भक्त और आज्ञाकारी थे। ये लोग फ्रांस की कुलीनों की तरह निरीह जनता का हर प्रकार से शोषण करके उनके गाढ़े पसीने की कमाई को अपने भोग विलास और आराम तलबी पर खर्च करते थे। फलत: कुलीन वर्ग जनता के आक्रोश के केंद्र बिंदु बनते जा रहे थे। इसके साथ-साथ धीरे धीरे इन्हें संरक्षण देने वाले जार के भी आमजनता विरोधी होते जा रहे थे।

चर्च तथा इससे संबंधित अधिकारी वर्ग के कार्यों से भी सर्वहारा वर्ग में असंतोष था। रूसी चर्च २० वीं शताब्दी के आरंभ से ही सम्राट के देवी अधिकारों (Divine right)के सिद्धांत में विश्वास रखता था और आम जनता को सदा सम्राट की अच्छी बुरी सभी प्रकार की आज्ञा का पालन करने के लिए बताता रहता था । पादरी लोग जनता को समझाते रहते थे कि हमारा सम्राट परमात्मा का प्रतिनिधि है, अतः हम सभी का कर्तव्य है कि उसकी आदेशों को ईश्वरीय आदेश मानकर पालन करें तथा उसके लिए अपनी श्रद्धा प्रेम और सम्मान हमेशा प्रकट करें।जार निकोलस द्वितीय (1894 से 1917) के समय एक पादरी rasputin का प्रभाव पूरे राजपरिवार पर खासकर उसकी पत्नी जरीना पर काफी था। अपने व्यापक प्रभाव का लाभ उठाकर Rasputin ने प्रशासन में हस्तक्षेप शुरू कर दिया। उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति एवं हटाने का अधिकार उसके हाथ में आ गया। फल स्वरूप राज दरबार में Rasputin के विरोध में एक दल बन गया जिसने दिसंबर 1916 में इस " पवित्र साधु" रासपुतिन की हत्या कर दी।

चर्च के खिलाफ यह असंतोष सर्वहारा वर्ग में भी धीरे-धीरे फैलता चला गया जो रूसी क्रांति का कारण बना।

नौकरशाही वर्ग के लोगों के कार्य तथा सैनिक वर्ग के लोगों की अंधभक्ति भी रूस में असंतोष का कारण बना। रूस जैसे विशाल देश की नौकरशाही भी विशाल थी ।उसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला था। सभी छोटे-बड़े कर्मचारी अपने दायित्वों को भूलाकर प्रजा का शोषण एवं अत्याचार करना शुरू कर दिया। इनकी नियुक्ति, प्रमोशन और स्थिरता जार की कृपा दृष्टि पर निर्भर थी,अतः जार की सभी उचित अनुचित आदेशों का पालन करने के लिए ये सदा तत्पर रहते थे। उन्होंने सम्राट को प्रसन्न रखना अपना उद्देश्य बना रखा था। सरकारी वर्ग के कर्मचारियों द्वारा शोषण से दुखी सर्वहारा वर्ग पर साम्यवादी का प्रभाव बढ़ने लगा और क्रांति के लिए पृष्ठभूमि तैयार होने लगी।

इसी तरह सैनिक वर्ग के विभिन्न पदों पर नियुक्ति या पदोन्नति या वेतन में बढ़ोतरी जार के द्वारा ही किया जाता था। यही कारण था कि सैनिक अधिकारी भी अपने कर्तव्यों को भूलाकर जार को ही खुश करने में लगे रहते थे ।जार के आदेश का पालन वे तत्परता से करते थे, चाहे वह आदेश उचित हो या अनुचित। सेना की दृढ़ राज भक्ति ने जार निकोलस द्वितीय (1894-1917)को और भी अधिक निरंकुश, स्वेच्छाचारी तथा उत्पीड़क बना दिया । इसका खामियाजा रूस को प्रथम विश्व युद्ध(1914-1918)में भुगतना पड़ा ।प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जिस तरह रूस की सेना हताश नजर आई, उससे लोगों में जार के प्रति गुस्सा और बढ़ता गया जो अंततः क्रांति का कारण बना।

जार निकोलस और उसका परिवार

रूसी क्रांति प्रमुख रूप से कृषक वर्ग एवं मजदूर वर्ग में व्याप्त असंतोष का परिणाम था। इस असंतोष को बौद्धिक वर्ग के लोगों ने एक नई दिशा प्रदान करने की कोशिश की ।रुसी समाज में कृषक वर्ग की आबादी सबसे ज्यादा थी परंतु वे अधिकार विहीन थे। अधिकांश कृषक "कृषि दास " थी, हालांकि 1861 ईसवी में एलेग्जेंडर द्वितीय द्वारा कृषि दास की मुक्ति की घोषणा की गई परंतु या न तो सभी प्रांतों में लागू किया गया और न ही इससे किसानों की स्थिति में कोई विशेष सुधार हुआ। खेती पुरानी पद्धति से की जाती थी। वहीं भूमिहीन किसानों को जमींदारों की भूमि पर काम करना पड़ता था। इन्हें कई तरह के करों का भुगतान भी करना पड़ता था, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अधिक चिंतनीय हो गई थी। समय-समय पर किसानों ने विद्रोह भी किया ।1902 ईसवी में में हरकोब और पोल्टावा के किसानो ने आंदोलन किया।1905 ईसवी में युक्रेन के दक्षिण-पश्चिम भाग काकेशस क्षेत्र, पोलैंड, वोल्गा नदी के एरिया में किसानों के विद्रोह हुए। 1905 ईसवी में समस्त कृषक प्रतिनिधियों का सम्मेलन मास्को में हुआ , यहां" रूसी कृषक संघ" बनाने का निर्णय लिया गया। फलस्वरूप 1906 ईसवी के कानून में प्रत्येक किसान को "कम्यून" से अपनी भूमि अलग अलग करने का अधिकार दिया गया। इन कानूनों के बावजूद किसानों के स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।

रूसी क्रांति में सबसे प्रमुख भूमिका श्रमिक वर्ग की रही। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विशेषकर क्रीमिया युद्ध (1853-56) के बाद वहां आधुनिकीकरण का जो दौर शुरू हुआ उसकी गति भी धीमी थी। 80 के दशक से रूस में औद्योगिक क्रांति का युग शुरू हुआ। यूरोपीय देशों से पूंजी आने लगी और यहां रेलवे, खनिज उद्योग खोले जाने लगे। औद्योगिकीकरण के पद चिन्हों पर व्यापार व्यवसाय में वृद्धि हुई तथा वेतन भोगी बुर्जुआ वर्ग तथा श्रमजीवी वर्ग उभर कर सामने आए। श्रमिकों को कम पैसे पर अधिक काम करना पड़ रहा था और उन्हें कई अधिकारों से भी वंचित रखा गया था।

मजदूर संघ नहीं बना सकते थे तथा हड़ताल करने पर कानूनी रोक थी। इन्हीं परिस्थितियों में जब समाजवादी दल ने अपने सिद्धांत एवं उद्देश्यों को इनके सामने रखा श्रमिक वर्ग की ओर आकृष्ट हुए। यही कारण था कि रूस की क्रांति में मजदूर वर्ग की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण थी। 1905 की प्रसिद्ध क्रांति को प्रारंभ करने में इस वर्ग ने जिस भूमिका का निर्वाह किया उससे उसकी वर्ग सजगता का परिचय भी मिलता है ।सेंट पीटर्सबर्ग के श्रमिकों ने हड़ताल कर के शासन को अस्त-व्यस्त कर दिया और अपनी पृथक सरकार की भी बना ली जिसे "श्रमिकों की सोवियत" का नाम दिया गया था। यद्यपि 1905 की क्रांति दबा दी गई, लेकिन श्रमिकों की राजनीतिक जागरण को नहीं दबाया जा सका और 1917 में लेनिन के नेतृत्व में इन्होंने सत्ता पर अधिकार कर लिया जिसे बोल्शेविक क्रांति के नाम से जाना जाता है।

रूसी क्रांति को वैचारिक आधार पढ़ा-लिखा बुद्धिजीवी वर्ग ने दिया ।रूस के Tolstoy; Turgenev; Dostoievsky आदि उपन्यास कारों ने भी रूसी जीवन की विफलताओं की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया। इनके साथ ही कॉल मार्क्स, मैक्सिम गोकी और बकुनिन के समाजवादी विचारों का भी देश के श्रमिकों एवं बुद्धिजीवियों पर प्रभाव पड़ा ।देश में कई समाजवादी दल बन गए थे जिनका प्रभाव कृषको और मजदूरों पर बढ़ रहा था ।इसी समय समाज में शून्य वाद (Nihnilism) का उदय हुआ जिसने प्राचीन व्यवस्थाओं को मिटाने का प्रयत्न किया।

इस दौरान समाजवादी विचारधारा से प्रभावित कई समाचार पत्र, पत्रिकाएं तथा छोटे-छोटे पर्ची निकलने शुरू हुए। रूस का पहला साम्यवादी प्लेखानों को माना जाता है जो रूस में जार की निरंकुशता को समाप्त करके साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना करना चाहता था। 1883 उसने" रशियन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी "की स्थापना की। 1898 ईस्वी में इस दल ने अन्य बहुत समाजवादी गुटों के साथ मिलकर " रशियन सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी "बनाई। किंतु संगठन और नीति की सवालों पर मतभेद के कारण यह नया दल 1903 ईस्वी में विभक्त हो गया। इनमें से एक गुट मेंशेविक के नाम से जाना गया क्योंकि वह अल्पसंख्यक टुकड़ा था ।यह गुट फ्रांस और जर्मनी में उस समय जिस तरह की पार्टी थी, उसी तरह की पार्टी बनाने के पक्ष में था। इन देशों की पार्टियां संसदीय चुनाव में भाग लेती थी। बहुसंख्यक गुट बोल्शेविक(Bolsheviks) नाम से जाना जाता है ।उसके अनुसार जिस देश में ना तो जनतांत्रिक अधिकार है और ना ही कोई संसद,वहां पर संसदीय प्रणाली के अनुकूल बनाया गया कोई भी दल परिवर्तन नहीं ला सकेगा। वह एक ऐसा दल बनाने के पक्ष में था जिसके सदस्य अनुशासित रहे और क्रांति के लिए काम करें। प्ले खानों के साथ-साथ लेनिन इस दल को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई। अंततः अक्टूबर 1917 में लेनिन ने केरांस्की की अंतरिम सरकार को समाप्त कर दिया और 26 अक्टूबर 1917 को लेनिन के नेतृत्व में रूस में अंतरिम सरकार का गठन हुआ जिसे "कॉन्सिल ऑफ पीपुल्स कमिसर्स " नाम दिया गया। लेनिन को इसका सभापति तथा ट्रार्टस्की को युद्ध मंत्री तथा नियुक्त किया गया।

[नोट: क्रांति के कारणों तथा इसके विस्तार की चर्चा खंड 1 में किया गया है।]